ISSN 2277-5331

हाशिये की आवाज़

संघर्षरत् लोगों की प्रथम मासिक पत्रिका

2016 वर्ष : LI कवर सहित पृष्ठों की सं. 44

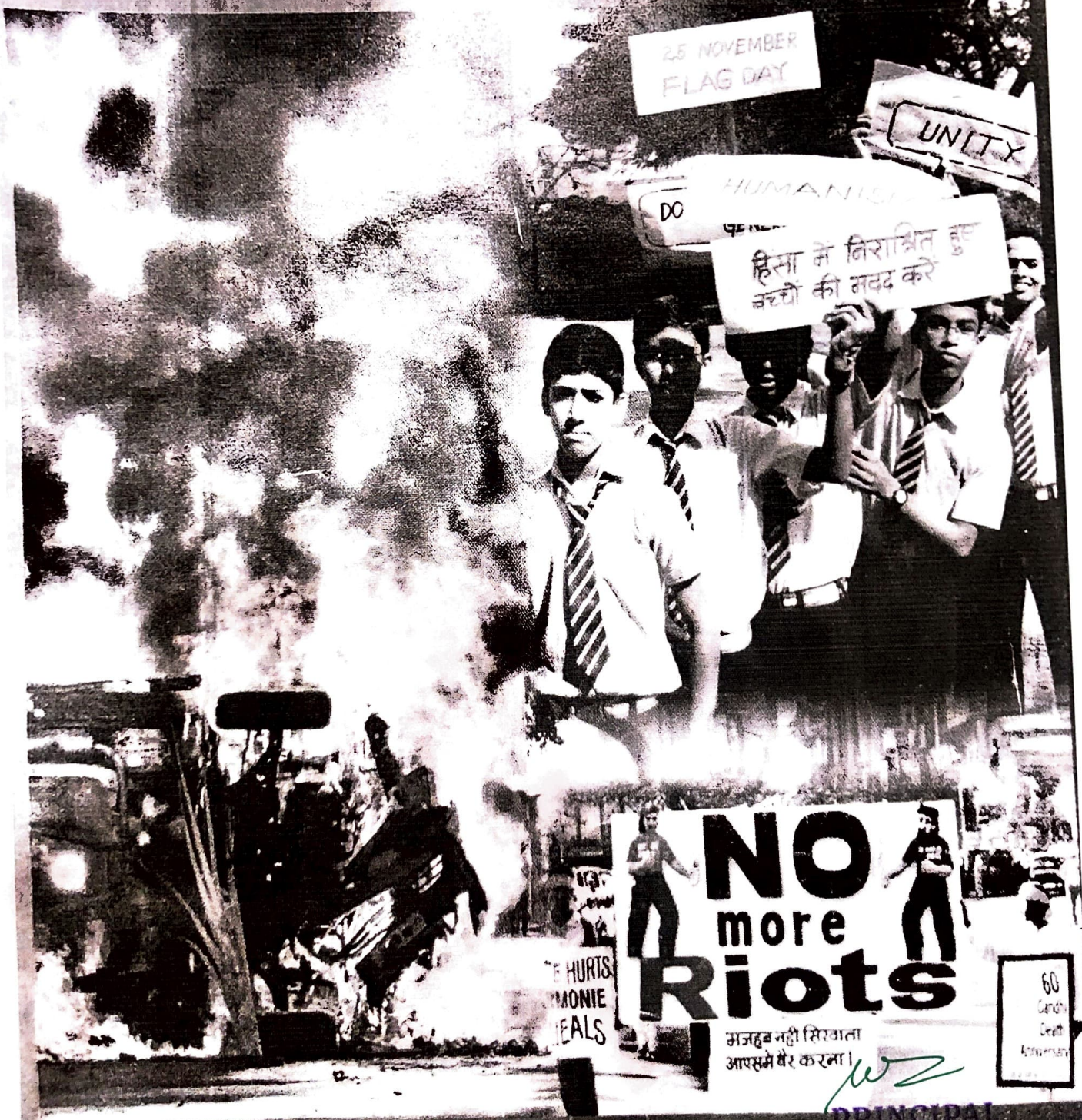

साम्प्रदायिकता की दहशत और सिसकती मानवीयता

PRINCIPAL
KARWAR - 581 301

बलिदान

वतन पर जान कुर्बान करेंगे,
माता भारती की शान बचायेंगे।
बहादुरों आगे बढ़ते जाना, दुश्मनों को मिटा देना
लहू बिछाये माता का मान बढ़ाते जाना
गद्दार न घुसपैठ करे, न सरहद पार करे
उन्हें चुन–चुनकर मारे, फिर कभी न निहारे।
अपने गुलिस्तान पर नाज करना,
अमन चैन से जीते रहना।

कश्मीर हमारा स्वर्ग है, आतंक कैसे फैलाएगा?
कहा नहीं सुनेगा तो, गोली खाकर मरेगा
हर सितम झेलकर भी मां तुझे हम बचायेंगे
सुरक्षा तेरी करते–करते, खुद की जान मिटा देंगे
दुश्मनों की मुंड उठाएंगे, तेरे चरणों में चढ़ाएंगे
लाख बाधाएं आने पर भी हम तुझे सजायेंगे
नादिर कितना होशियार रहे हम उसे मिटाएंगे।
हर पल तेरी याद में, हम अपनों से छुट जाएंगे
गम नहीं खुद मिटने से, हम कहेंगे अभिमान से
भारत माता अमर रहे वीरों कें बलिदान से।

श्रीमती संध्या दत्ता कदम
सम्पर्क : केनरा वेल्फेयर ट्रस्ट, दिवेकर कॉलेज ऑफ कॉमर्स, कोडीबाग, कारवार, जिला-उत्तर कन्नड़-581352, कर्नाटक

ग़ज़लें-(4)

देखो लाल आसमान हुआ है
कहीं पे कत्लेआम हुआ है
सड़क पे सुनसान है इस कदर
शायद हिन्दू मुसलमान हुआ है
खून के कतरे बता रहे हैं
जरूर कहीं इम्तेहान हुआ है।
खुश हैं दंगा भड़काने वाले
अमन वाला तो परेशान हुआ है
कयामत तक न मिटेगा यारों
इनसानियत पे ऐसा निशान हुआ है।
नफरत की फैली आग बुझाओ तो बात है,
दिल में किसी के प्यार जगाओ तो बात है।
हिंसा की लपटों में शहर झोंकने वालों,
सद्भावना के दीप जलाओ तो बात है।
कौमों के नाम पर लोगों को बांटते क्यूं हो,
इनसान को इनसान से मिलाओ तो बात है।
मरहम न लगाओ किसी ज़ख्मी की चोट पर,
मुल्क से फसादियों को मिटाओ तो बात है।
इधर–उधर की बात बहुत कर ली दोस्तों,
इनसानियत का पाठ पढ़ाओ तो बात है।
तेरा नहीं मेरा नहीं यह मुल्क है सबका,
यह बात ज़रा सबको बताओ तो बात है।

आदिल खान
सम्पर्क : क्षत्रिय छात्रावास, पुराना शिवली रोड, कल्याणपुर, कानपुर नगर-208017, उत्तर प्रदेश
ईमेल : mohdadil.k2009@gmail.com

अतिराष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद और अतिराष्ट्रवाद के बीच
महीन–सा फासला है
राष्ट्रवाद के उत्साह में
हम अतिराष्ट्रवाद पर चले जाते हैं और
अकारण ही
अपने लोगों का
विरोध करने लगते हैं
जानबूझकर नामसझी में
हम अपने ही
देश के
खिलाफ हो जाते हैं और
हमें पता ही नहीं चलता।
अपने उत्साह, अपने नारों के बीच
अपने ही अलग–थलग पड़ जाते हैं हमसे
अपने ही लोगों को हम पाकिस्तान
और आतंकवाद से जोड़कर
घटते–बढ़ते अतिराष्ट्रवाद की ओर
चलने लगते हैं हम।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा
सम्पर्क : पाटनी कॉलोनी, भरत नगर, चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा-480001, मध्य प्रदेश